International Journal of Academic Research
P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]

हिंदी साहित्य के इतिहास की यात्रा

G. Lakshmi prasad
Hindi, Assistant professor, Aditya degree college, Asms. Kakinada

हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रारम्भ की जानकारी प्राप्त कर पाएँगे।
हिन्दी साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालों की अवधि के बारे में जान पाएँगे।
हिन्दी साहित्य के इतिहास की एक समग्र रूपरेखा समझ पाएँगे।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास की प्राथमिक चिन्ता उसके प्रारम्भ की है। कब से हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ हुआ? दूसरे, जिस समय हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ हुआ था, उस समय हिन्दी भाषा का स्वरूप क्या था ? क्या उस समय भी हिन्दी का वही रूप था, जो आज है। अर्थात क्या हिन्दी साहित्य का इतिहास खड़ी बोली का ही इतिहास है। इस दृष्टि से यह जान लेना आवश्यक है कि हिन्दी साहित्य का इतिहास सिर्फ खड़ी बोली का इतिहास नहीं है। खड़ी बोली का साहित्य तो आधुनिक काल में सन् 1870 के बाद का साहित्य माना जाता है। उससे पहले आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि का काल माना जाता है। इस काल तक खड़ी बोली का रूप स्थिर ही नहीं हो पाया था।

खड़ी बोली से पूर्व हिन्दी भाषी प्रान्तों की काव्यभाषा ब्रजभाषा थी, जिसका प्रारम्भ चौदहवीं सदी में हुआ विशेष रूप से सूरदास के काव्य से। इसके बाद उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक साहित्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा प्रतिष्ठित थी। इसके साथ-साथ अवधी, डिंगल और मैथिली में भी साहित्य रचनाएँ हो रही थीं। डिंगल (पुरानी राजस्थानी) और मैथिली में और भी पहले से काव्य रचनाएँ होने लगी थीं।

इससे पूर्व पुरानी हिन्दी का काल था। अर्थात अपभ्रंश के बाद की भाषा।कुछ इतिहासकारों का मत है कि यहीं से वास्तविक हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ माना जाना चाहिए।

आदिकाल

हिन्दी के अधिकांश आलोचकों का अनुमान है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास का प्रारम्भ सन् 1000 के आसपास होता है। इस दृष्टि से सन् 1000 से 1300 तक का काल आदिकाल माना जाता है। इस युग में देश में कोई केन्द्रीय सत्ता नहीं थी। छोटे-छोटे राजा-महाराजा अपने क्षेत्र का विस्तार करने के लिए हमेशा युद्धरत रहते थे। भारत में इस्लाम का प्रवेश हो चुका था। सन् 1192 में पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद भारत में मुस्लिम साम्राज्य विधिवत स्थापित हो चुका था। सभी राजा संघर्षरत और अस्थिर थे। कोई भी, कभी भी पराजित हो सकता था। कवि राजदरबार में रहते थे। वे राजा के साथ युद्ध भूमि में भी विचरण करते थे। उसी अनुभव के आधार पर रासो ग्रन्थों की रचना हुई। कुछ कवि जनता के बीच में रहते थे, जो आगे चलकर भक्तिकाल के प्रेरणा स्रोत बने।

इस युग में धार्मिक दृष्टि से इस्लाम के साथ-साथ हिन्दू, बौद्ध और नाथ-सिद्ध भी थे; ये भी आपस में वैचारिक-राजनीतिक संघर्ष की स्थिति में थे। ऐसे ही समय में बख्तियार खिलजी ने मात्र 18 घुड़सवारों की सेना की मदद से बंगाल पर विजय प्राप्त कर ली और सन् 1193 में नालन्दा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया। भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो इस काल में संस्कृत में काफी रचनाएँ हो रही थीं। संस्कृत का ज्ञान उन दिनों प्रतिष्ठा की बात समझी जाती थी। इस काल में हेमचन्द्र (सन् 1088-1097), अमीर खुसरो (सन् 1253-1325), चन्दवरदाई (सन् 1126-1196), जगनिक (सन् 1173), मुल्ला दाऊद (सन् 1379), विद्यापति (सन् 1360-1488) उपस्थित थे।

इस काल में यह निश्चित नहीं हो पा रहा था कि आगे चलकर हिन्दी भाषी प्रान्तों की भाषा का क्या रूप होने वाला है ? सामाजिक स्तर पर वर्णाश्रम व्यवस्था और वर्णाश्रम विरोध केन्दीय प्रश्न था। धर्म के स्तर पर धीरे-धीरे हिन्दू और सूफीमत का वर्चस्व स्थापित हो रहा था।

International Journal of Academic Research
P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]

ऐसे अस्पष्ट-अनिर्णय के काल में हिन्दी साहित्य का आदिकाल अस्तित्व में आया। जिसमें सिद्धों और नाथों की रचनाएँ, रासो काव्य, विद्यापति की रचनाएँ, खुसरो की रचनाएँ सब कुछ अपनी-अपनी तरह से सामने थीं। इस काल की कोई निश्चित केन्द्रीय विशेषता नहीं बन पाई। कई तरह की रचनाएँ उस दौर में लिखी गईं।

मध्यकाल

भक्तिकाल

इसके पश्चात् भक्तिकाल का प्रारम्भ हुआ।इतिहासकारों ने भक्तिकालीन साहित्य का इतिहास जानने के लिए भक्तिकाल की पृष्ठभूमि की विस्तार से चर्चा की है।उन्होंने शंकराचार्य के उदय और बौद्ध धर्म के ह्रास के बाद की दार्शनिक मान्यताओं में इसके बीज ढूँढे हैं। यहाँ निर्गुण-सगुण विवाद, रामभक्ति, कृष्णभक्ति, सूफी प्रेमाख्यान की प्रमुख प्रवृत्तियाँ सामने आईं।खास बात यह है कि ये चारों प्रवृतियाँ इस काल में लगभग साथ-साथ चलीं। फिर भी थोड़े बहुत फेर बदल के साथ कबीर आदि का निर्गुण पन्थ सबसे पहले आया। इसी के साथ सूफियों की उपस्थिति, फिर कृष्णभक्ति और अन्ततः रामभक्ति- की परम्परा बनी। राजनीतिक दृष्टि से यह काल सन्1300 से 1650 तक मुस्लिम शासन का काल था। दिल्ली सल्तनत से मुग़ल शासन तक यह काल फैला हुआ था। भाषा की दृष्टि से अवधी, ब्रज और सधुक्कड़ी, जिसे खड़ी बोली का प्रारम्भिक रूप कह सकते हैं, साहित्यिक भाषा के रूप में मान्य थी। विद्यापति की उपस्थिति से मैथिली का गौरव भी बना हुआ था। भक्तिकाल के उदय की चर्चा के प्रसंग में भारत में इस्लाम का आना केन्द्रीय प्रश्न था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल के उदय को इस्लाम की प्रतिक्रिया के रूप में देखा, जबकि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने माना कि भारत में इस्लाम का आना नहीं भी हुआ होता, तो भी हिन्दी साहित्य का बारह आना वैसा ही होता, जैसा हुआ है। इस कारण द्विवेदी ने विस्तार से भारतीय चिन्ताधारा के विकास की कहानी बताई। बाद के इतिहासकारों ने इस बिन्दु पर इतना विवाद नहीं किया। उन्होंने तथ्य की तरह इस्लाम की उपस्थिति को स्वीकार किया। बाद के इतिहासकारों और आलोचकों ने दलित जातियों के स्वाभिमान के प्रश्न को गम्भीरता से उठाया। वर्णाश्रम धर्म का महत्त्व या उसको दी गई चुनौती, केन्द्रीय प्रश्न के रूप में सामने आई। भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ वर्णाश्रम धर्म पर प्रश्न उठाने से हुआ और भक्तिकाल का अन्त वर्णाश्रम धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा से हुआ। तुलसीदास के रामचरितमानस में यह प्रकिया पूरी तरह घटित हुई। तुलसीदास के समन्वयवाद में निर्गुण-सगुण विवाद के साथ शैव-वैष्णव विवाद भी समाप्त हुआ। तुलसी के बाद न कोई बड़ा रामभक्त कवि हुआ और न ही भक्तिकाल की अन्य धारा का ही कोई कवि पैदा हुआ। हिन्दी साहित्य में राधा-कृष्ण के बहाने रीतिकाल की प्रतिष्ठा हुई।

रीतिकाल

भक्तिकाल की कृष्णभक्ति काव्यधारा और ब्रजभाषा के गर्भ से रीतिकाल का उदय हुआ। सन् 1650-1857 तक के काल को हिन्दी में रीतिकाल के रूप में जाना जाता है। इस काल की सभी सामान्य प्रवृतियाँ रीतिबद्ध और रीतिमुक्त, सभी तरह के कवियों में पाई जाती हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की दृष्टि से इस काल पर लगभग सर्वानुमती बनी हुई थी। कोई विवाद नहीं था। इस दौरान युद्ध बहुत कम हुए। शान्तिकाल में, शासन में भोगवादी प्रवृतियाँ हावी थीं। काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा सर्वमान्य बन गई थी।

आधुनिककाल

इसके पश्चात् आधुनिक काल के उदय का प्रश्न आता है। इसका प्रारम्भ भारत में अंग्रेजी राज की स्थापना और उसके विरोध से है। कुछ विद्वान भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से, सन् 1857 से आधुनिक काल का प्रारम्भ मानते हैं। कुछ इतिहास चिन्तक सन् 1800 से आधुनिककाल की पृष्ठभूमि की चर्चा करते हैं। मध्यकाल की समाप्ति और आधुनिक काल का आगमन हिन्दी साहित्य के इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण घटना है। यह घटना लगभग वैसी ही है, जैसी आदिकाल के समय में थी। तब संस्कृत में अभूतपूर्व परिवर्तन हो रहे थे। सन् 1000 से लेकर सन् 1200-1300 तक असमंजस की स्थिति बनी हुई थी। यही असमंजस सन् 1800 से सन् 1850-60 तक व्याप्त था। कविता की भाषा ब्रजभाषा ही रहेगी या खड़ी बोली इसका स्थान ले लेगी? इसका निर्णय उस समय तक नहीं हो पा रहा था। रीतिकाल की समाप्ति से पहले आधुनिकता की आहट सुनाई देने लगी थी।

सन् 1757 के प्लासी युद्ध में अंग्रेजी को निर्णायक विजय मिल चुकी थी। भारत पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का विधिवत शासन प्रारम्भ हो चुका था।एक सौ वर्षों तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन रहा। इसी बीच फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई।

अंग्रेजों की शिक्षा निति पर चर्चा होने लगी। छापाखाने का आविष्कार हुआ। बाईबल का अनुवाद और भारत का भाषा सर्वेक्षण हुआ। इन सब चीजों का प्रभाव उन्नीसवीं सदी के अन्त होते-होते दिखाई देने लगा था। भारत में समाज-सुधार आन्दोलन प्रारम्भ हो चुके थे। सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हो चुकी थी। भारत में अख़बार प्रकाशित होने लगे थे। पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का कार्य जोरों पर था। यह सब तो था, परन्तु साहित्य अब भी रीतिकाल के अनुरूप ही चल रहा था।

नए ढंग के साहित्य का सर्जन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के आगमन के बाद शुरू हुआ, परन्तु आधुनिक काल के साहित्य को समझने के लिए भारतीय राजनीति, इतिहास, समाज और संस्कृति की समझ प्लासी युद्ध में क्लाइव की विजय से प्रारम्भ हुई। उस युग में साहित्य सर्जन परम्परागत ब्रजभाषा में हो रहा था। अतः हिन्दी साहित्य के इतिहास में पृष्ठभूमि और प्रारम्भ की तिथियाँ अलग-अलग हैं। आधुनिक काल की तरह भक्तिकाल में भी ये दोनों तिथियाँ अलग अलग रही थीं। अर्थात आधुनिक युग का प्रारम्भ सन् 1857 से माना जा सकता है, परन्तु इस युग की पृष्ठभूमि को समझने के लिए प्लासी के युद्ध से प्रथम स्वाधीनता संग्राम तक के इतिहास को भी ठीक से समझने की जरूरत है।

सन् 1857 में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की उम्र मात्र 7 वर्ष की थी, उनकी मृत्यु सन् 1885 में हुई, तब भी भारतेन्दु युग सन् 1900 तक चलता रहा। इतिहासकार इसके पक्ष में तर्क देते हैं कि भारतेन्दु की मृत्यु भले हो गई हो, परन्तु भारतेन्दु मण्डल के लेखक उस समय जीवित थे और साहित्य सर्जन कर रहे थे। दूसरे, भारतेन्दु युग की जीवन-दृष्टि और साहित्य-दृष्टि सन् 1900 तक बनी रही। इसलिए भारतेन्दु के निधन के बाद भी भारतेन्दु युग चलता रहा।

इसके बाद सन् 1900 से सन् 1920 तक का काल हिन्दी में द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है। इस युग की केन्द्रीय पत्रिका सरस्वती के सम्पादक महावीरप्रसाद द्विवेदी थे। हालाँकि सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन सन् 1900 से प्रारम्भ हो गया था और द्विवेदी सन् 1903 में इस पत्रिका के सम्पादक बनाए गए, तब भी द्विवेदी युग का आरम्भ सन् 1900 से 1920 तक माना जाता है। इस युग ने हिन्दी में खड़ी बोली की स्वीकृति की पृष्ठभूमि तैयार की।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिंदी साहित्य के इतिहास- श्री राम चंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य के इतिहास-रामकुमार वर्मा
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह